

लोकसभा

तारांकित प्रश्न संख्या *150

02 मार्च, 2020 को उत्तर के लिए

इस्पात संयंत्रों का आधुनिकीकरण तथा विस्तार

*150. श्री बल्ली दुर्गा प्रसाद रावः

श्रीमती कवीन ओझाः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या भारतीय इस्पात उद्योग अभी भी कच्चे माल जैसे कोयला और लौह अयस्क की सतत आपूर्ति की उपलब्धता संबंधी अनिश्चितताओं से जूझ रहा है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस संबंध में सरकार द्वारा क्या कार्रवाई की गई है/किए जाने का प्रस्ताव है; और
- (ग) विद्यमान इस्पात इकाइयों तथा ग्रीनफील्ड संयंत्रों का आधुनिकीकरण और विस्तार करने, विश्वस्तरीय तथा उसे लागत प्रतिस्पर्धी तथा सामाजिक रूप से उत्तरदायी इस्पात उद्योग बनाने के संबंध में सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं/किए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर

इस्पात मंत्री

(श्री धर्मेन्द्र प्रधान)

(क) से (ग): विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

“इस्पात संयंत्रों का आधुनिकीकरण तथा विस्तार” के संबंध में संसद सदस्यों श्री बल्ली दुर्गा प्रसाद राव और श्रीमती क्वीन ओझा द्वारा दिनांक 02 मार्च, 2020 को पूछे जाने वाले लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *150 के भाग (क) से (ग) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख): देश में लौह अयस्क का उत्पादन घरेलू इस्पात उद्योग द्वारा लौह अयस्क की वर्तमान माँग/खपत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। तथापि, कोकिंग कोल की संपूर्ण माँग की पूर्ति घरेलू उत्पादन से नहीं होती है क्योंकि देश में उच्च गुणवत्तायुक्त कोकिंग कोल (निम्न राख वाला कोयला) की उपलब्धता सीमित है और इसलिए कोकिंग कोल के आयात का सहारा लेने के सिवाय कोई विकल्प नहीं बचा है।

घरेलू बाजार में लौह अयस्क की उपलब्धता को और भी बढ़ाने के लिए खान मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 16.09.2019 के आदेश के तहत सेल को पूर्ववर्ती वर्ष के अपने कुल खनिज उत्पादन का 25% खुले बाजार में उपलब्ध कराने की अनुमति दी गई है। इसके अतिरिक्त, दिनांक 16.09.2019 के एक अन्य पृथक आदेश में सेल को निम्न कोटि के आयरन फाइंस और अयस्कों (स्लाइम सहित) के 70 मिलियन टन के पुराने स्टॉक, जो सेल के विभिन्न स्वोपयोगी खदानों में पड़े हुए हैं, का निपटान करने की भी अनुमति दी गई है।

जहाँ तक कोकिंग कोल का संबंध है, वर्ष 2018-19 के दौरान इस्पात उद्योग के लिए कोकिंग कोल की कुल माँग 58.37 एमटी थी। इनमें से 51.83 एमटी की पूर्ति आयातों से की गई थी, 1.6 एमटी भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) और कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) द्वारा दिए गए और शेष की पूर्ति सेल और टाटा स्टील की स्वोपयोगी कोयला खानों द्वारा की गई।

भारतीय इस्पात उद्योगों के लिए कोकिंग कोल की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:-

- i. बीसीसीएल और सीआईएल द्वारा नए वाशरी की स्थापना तथा सेल द्वारा मौजूदा वाशरी की क्षमता का संवर्धन।
- ii. कोकिंग कोल के आयात के स्रोतों को विविधिकृत करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और मंगोलिया से कोकिंग कोल का आयात करने हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

- iii. कोकिंग कोल खानों का इस्पात सीपीएसई को हालिया आवंटन अर्थात् एनएमडीसी को टोकीसूद नॉर्थ कोयला खान और रोहने कोयला खान तथा आरआईएनएल को रबोडीह ओसीपी कोयला खान।
- iv. बीसीसीएल से सेल को कच्चे कोकिंग कोल का दीर्घकालिक लिंकेज प्रदान करना।
- v. तसरा कोकिंग कोल ब्लॉक पट्टे का सेल के पक्ष में विस्तार।

(ग): इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है और सरकार की भूमिका सुविधाप्रदायक तक सीमित है। इस्पात संयंत्रों के आधुनिकीकरण और विस्तार तथा नए इस्पात संयंत्रों/ग्रीनफील्ड परियोजनाओं की स्थापना करने से संबंधित निर्णय वाणिज्यिक पहलुओं, बाजार की गतिविधियों और परियोजनाओं की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता के आधार पर संबंधित कंपनियों द्वारा लिए जाते हैं।

इस्पात सीपीएसई के आधुनिकीकरण और विस्तार के उपाय निम्नवत् हैं:-

- i. सेल ने 12.8 मिलियन टन प्रति वर्ष (एमटीपीए) की अपनी कूड इस्पात क्षमता को बढ़ाकर 21.4 एमटीपीए करने के लिए भिलाई (छत्तीसगढ़), बोकारो (झारखंड), राउरकेला (ओडिशा), दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल) और बर्नपुर (पश्चिम बंगाल) में अपने पाँच एकीकृत इस्पात संयंत्रों तथा सेलम (तमिलनाडु) में विशेष इस्पात संयंत्र के आधुनिकीकरण और विस्तार का कार्य आरंभ किया था।
- ii. आरआईएनएल ने अप्रैल, 2015 में 12,291 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से अपनी क्षमता दोगुनी अर्थात् 3 एमटीपीए से 6.3 एमटीपीए करने से संबंधित अपने विस्तार कार्यक्रम को पूरा कर लिया है। सभी इकाइयाँ प्रचालनाधीन हैं। आधुनिकीकरण के साथ-साथ एक और कन्वर्टर तथा कास्टर संस्थापित किए गए हैं, जिससे उत्पादन क्षमता में 1 एमटीपीए की बढ़ोत्तरी हो गई है, अर्थात् यह क्षमता 6.3 एमटीपीए से बढ़कर 7.3 एमटीपीए हो गई है।
- iii. एनएमडीसी छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला में जगदलपुर के पास नगरनार में 3.0 एमटीपीए की क्षमता वाला एकीकृत इस्पात संयंत्र स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत है। संयंत्र का निर्माण लगभग पूरा होने को है।
